(स्व0) वसु मालवीय

कुछ सपने धारावाहिक से	सन्दर्भ लोने से
कुछ सपने धारावाहिक से आकर चले गये हम केवल दर्शक थे केवल मंच हमारा था उन दृश्यों को हमने अपनी आंख उतारा था कुछ गायक आए औ', हमको गाकर चले गए कई–कई अंकों में हमको यूं ही बंटना था पूर्व कथा, निर्धारित मुद्रा कमशः घटना था भाषा के जादूगर, सब उलझाकर चले गए।	रह गयीं अनुभूतियां जो व्यक्त होने से बोलती हैं कहीं भीतर किसी कोने से अनकहे संवाद मन से कौंध जाते हैं और हम निःशब्द होकर गुनगुनाते हैं बहुत कुछ धुलता नहीं है स्लेट धोने से खिड़कियों से रेल की, जो दृश्य छूटे थे टूटते जलबिम्ब ही शायद अनूठे थे क्या नहीं खोया किसी का साथ खोने से जब कभी होते अकेले मौन कमरे में संग होता है न जाने कौन कमरे में छू रहे एकान्त, कुछ सन्दर्भ लोने से।
('नये–पुराने' गीत अंक–6, अप्रैल–2000 से साभार)	सम्पर्क– द्वारा यश मालवीय ए–111 मेहंदौरी कालोनी ठलाहाबाद (उ.प्र.)